मेरा पन्ना

पानी का किनारा

मैंने झील से पूछा,
क्या तुम मुझसे शादी करोगी?
मैंने नदी से पूछा,
क्या तुम मेरे साथ भागोगी?
मैंने तालाब से पूछा,
क्या तुम मेरे साथ कूदोगे?

– जेस्सिका बेन्नेट, आठ साल,
अमरीका (अनुवादः तेजी ग्रोवर)

सौरभी प्रिया, पाँचवीं, टोंक, राजस्थान

दो दोस्त

एक बार दो दोस्त थे। उनके नाम थे मोटू और ढँढू। वे बहुत अच्छे दोस्त थे। एक बार मोटू ने ढँढू को एक खिलौना खरीदा। ढँढू को बहुत खुशी आई। उसने शुक्रिया कहा।

– गौरव शास्त्री, चौथी, ऑर्किड स्कूल, पुणे, महाराष्ट्र

नर्मदा जी के किनारे रहते हम...

हम दो भाई हैं – तरुण और बबलेश। हम लोग होशंगाबाद में नर्मदा जी के किनारे रहते हैं। हमारे बड़े मज़े हैं – क्योंकि हम चुम्बक से नदी से पैसे पकड़ने जाते हैं। दौड़-दौड़कर जाते हैं। सबसे ज़्यादा पैसे हमको तब मिलते हैं जब दुर्गा जी को सिराया जाता है। साथ में बहुत सारे नारियल मिलते हैं और परसाद भी मिलता है। हम चुम्बक को गोल-गोल घुमाकर फेंकते हैं। एक-एक दान (बार) में बहुत सारे पैसे आते हैं। सूपे में कोई से भगवान को सिराते हैं तब भी खूब पैसे मिलते हैं।

हमारे घर में जब खाने के पैसे खत्म हो जाते हैं हम उसी पैसे में से सामान ले आते हैं। नारियल के लिए बहुत सारे जन कूदते हैं, कोई के भी हाथ आ जाता है।

लड़कियाँ किनारे पर खड़ी होती हैं। लोग बाग आते हैं और उन्हें पैसे देते हैं और टीका लगा देते हैं।

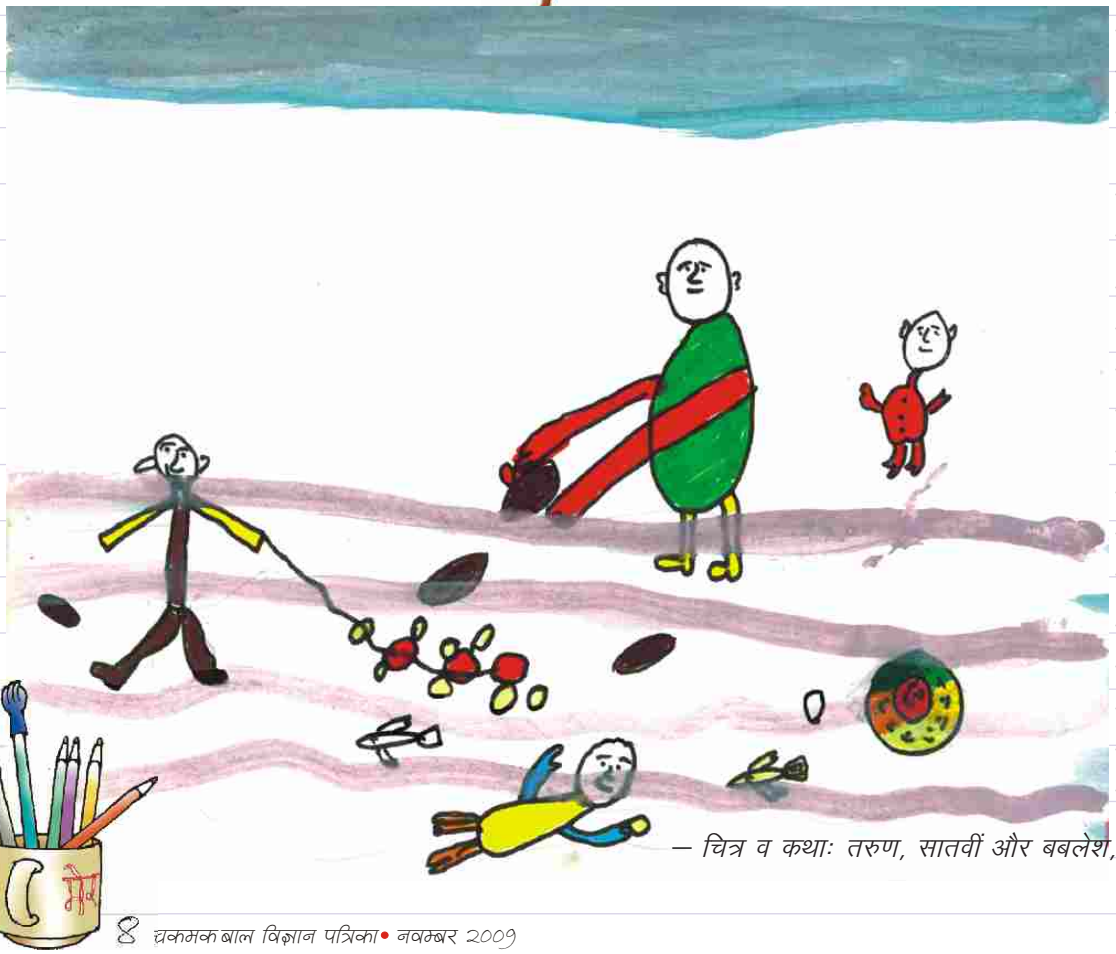

– चित्र व कथाः तरुण, सातवीं और बबलेश, पाँचवीं, होशंगाबाद, म.प्र.

क वि ता एँ

—रुचि परसाई, नौवीं, उज्जैन, म.प्र.

मेरे बाबा

मेरे बाबा, मेरे बाबा,
करते रहते शोर शराबा।
रैन दिवस भरते खर्राटे,
जगने पर वे सबको डाँटे।
दादी अम्मा से हैं डरते
उनके आगे पानी भरते।
हम सब दिन भर यही मनाएँ,
ईश्वर उनकी उम्र बढ़ाएँ।

गणित

यह गणित बड़ी दुखदाई है,
बहुतों की आफत आई है।
स्कूल से जब घर जाती हूँ,
दस-बीस सवाल लगाती हूँ
जब ब्लैक बोर्ड पर जाती हूँ
तब इधर-उधर चकराती हूँ।
मानो दिमाग में काई है,
यह गणित बड़ी दुखदाई है।

—अर्जिता, छठी, जे.बी.ए एकेडमी, फैज़ाबाद, उ. प्र.

पहेलियाँ

मुर्गी ऐसी एक निराली
चलत-चलत थक जाए
लाओ चाकू काटो गर्दन
फिर चलने लग जाए।

बित्ता भर का लम्बा चोर
चलते-चलते छिप जाए।

काठके कपड़े पहने घूमे
बतलाओ क्या कहलाए?

— रेनू सिंह शेखावत, पहली, प्रोजेक्ट हमारा विद्यालय, राजस्थान

बाढ़

बहुत समय पहले की बात है। बरसात का मौसम था। एक आदमी गाँव से लगभग डेढ़ किलोमीटर दूर एक झोंपड़ी बनाकर अपनी बीबी व बच्चे के साथ रहता था। वह जब काम करने जाता, उसके घर में खाने को तभी आता था। उसके पास खेती भी नहीं थी। एक दिन अचानक चारों ओर काले-घने बादल छा गए और बेहद बारिश होने लगी। अब ऐसी भीषण बारिश में वह काम करने कैसे जाता? अब रात-दिन बारिश ही बारिश होने लगी। जितना राशन उसके घर में था वो भी समाप्त हो गया। और अब वे तीनों भूख से तड़पकर मरने लगे। आखिर में जाकर वे तीनों बेचारे भूख के कारण मर गए। तभी उस गाँव में बाढ़ आ गई। बाढ़ के साथ उन तीनों की लाशें और टूटी-फूटी झोंपड़ी भी बह गई।

—आशीष सिन्हा, सातवीं, अपना घर, कानपुर, उ.प्र.

— तुका, पहली, भोपाल

एक चुटकुला

अध्यापकः बताओ मच्छर और मक्खी में क्या अन्तर है?

छात्राः सर, मक्खी जाँच करती है जबकि मच्छर इंजेक्शन लगाता है।

—रेणु जैन, छठी, लाडनू, राजस्थान

— कहानी व चित्र: अक्षर, पहली, होशंगाबाद, म.प्र.

मेट्रो में बड़ा मज़ा आया...

अप्रैल महीने में मैं मम्मी-पापा और आजी के साथ दिल्ली गया था। मेरे साथ उदयपुर से आए मेरे दोस्त भी थे। वहाँ पर हम मेट्रो से घूमने गए। मेट्रो बहुत अच्छी चमकती थी और अन्दर ठण्डी-ठण्डी हवा आती थी। मम्मी बोल रही थी इसमें ए.सी. लगा है। एक जगह मेट्रो स्टेशन पर मम्मी ने मेरा टोकन नहीं लिया तो मैं उस गेट में ही अटक गया। उसके बाद मैं इतना डर गया कि किसी भी स्टेशन पर उसमें से बाहर निकलने के लिए घबराता था, हनुमानजी का नाम लेने के बाद भी। एक जगह तो वहाँ के भैया ने मुझे गेट के ऊपर से मम्मी को पकड़ाया। हर स्टेशन पर मम्मी-पापा की चैकिंग होती थी। मैं मेरी भी करवाता था। एक बार मेरे पास एक छोटा-सा बैग था। उसमें बन्दूक थी। चैकिंग का गेट आया और मैं रोने लगा। वहाँ की लड़की को मैंने डर के मारे भैया कहा। वह ज़ोर से हँसी। फिर दीदी बोला और कहा कि मेरे बैग में बन्दूक है लेकिन वह नकली है। अब की बार माफ कर दो। और बड़ी मुश्किल से जेल जाते-जाते बचा। उन्होंने बोला कि बैग में गन (बन्दूक) नहीं रखना। अगली बार मिलेगी तो माफ नहीं करेंगे। वहाँ से तो मैं छूट गया पर ट्रेन में गया तो वहाँ बहुत भीड़ थी। मैंने बैग में से गन निकाली और ढिशक्यां..........ढिशक्यां....... करने लगा और बोला, "ओ भैया! जल्दी बैठने की जगह दो। मैं छोटा-सा आतंकवादी हूँ। तो लोगों ने डरकर सचमुच मुझे आतंकवादी समझ लिया और जल्दी से जगह दे दी। अब मुझे लगा कि गन फेंकना नहीं चाहिए। इससे तो बैठने की जगह मिलती है। और कहीं चैकिंग हुई तो पैन्ट में छिपा लूँगा।

मेट्रो में जो खम्भे हैं उसमें पकड़ने के लिए हैण्डल हैं। वह तो मुझे बॉडी बनाने के लिए बहुत काम आए। मैं फटाफट खम्भे पर चढ़ जाता था और दो हैण्डल में लटककर बॉडी बनाता था। उसमें मुझे बहुत मज़ा आता था। कुछ लोग हँसते थे और कुछ गुस्सा होते थे। मेट्रो के गेट के पास खड़ा होकर मैं कहता था खुल-जा-सिमसिम तो गेट खुल जाता था। और मैं बोलता था बन्द-हो-जा-सिमसिम तो जल्दी से गेट बन्द होता था। एस्केलेटर पर चढ़ना मुझे बहुत पसन्द था इसलिए मैं पापा को बार-बार चढ़ने के लिए कहता था और हम वहाँ की सभी सीढ़ी चढ़कर आते थे। बॉम्बे में भी मैंने ऐसा ही किया था। दिल्ली की मेट्रो बहुत मज़ेदार थी। लगता था दिन भर इसमें ही बैठे रहो। दिल्ली में मैंने इंडिया गेट, लाल किला, गुरुद्वारा और बिरला मन्दिर देखा। और पापा के दोस्त की गाड़ी में बैठकर चुनाव-प्रचार किया परचे बाँटे और नारे भी लगाए। बहुत मज़ा आया।

(अक्षर पहली में पढ़ता है। लिखना तो वह अभी सीख रहा है। पर कहानी सुनाना उसे खूब आता है। यह कहानी अक्षर ने अपनी माँ को सुनाई थी।)